समय के संग साहित्य

Author Copy

संपादक
डॉ. रेखा सेठी
डॉ. रेखा उप्रेती

RSethi

संजय प्रकाशन
दिल्ली (भारत)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
के सहयोग से प्रकाशित

© प्रकाशक

प्रकाशक :
संजय प्रकाशन
4378/4 डी, 209 जे.एम.डी. हाऊस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : (का.) 23245808, 41564415
मो. : 9312439193, 9313438740

ISBN 81-7453-261-7

प्रथम संस्करण : 2006

मूल्य : 250.00 रुपए

शब्द-संयोजन
कंप्यूटेक सिस्टम
दिल्ली-110032

मुद्रक :
रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स
दिल्ली-110053

अनुक्रम

दो शब्द ix

समय के संग साहित्य xi

पहला खण्ड

डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी 3
स्थानीय रंगों के बावजूद साझे सवालों से जूझता भारतीय साहित्य : एक प्रस्तावना

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल 19
साहित्य में उत्तर आधुनिकता से जुड़े विमर्श

डॉ. सुहेल अहमद फ़ारुक़ी 38
स्थानीय रंगों के बावजूद साझे सवालों से जूझता भारतीय साहित्य—उर्दू शायरी के हवाले से

डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम 47
स्थानीय रंगों के बावजूद साझे सवालों से जूझता भारतीय साहित्य—तमिल और मलयालम भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में

दूसरा खण्ड : कविता उत्सव

परिचय—कुँवर नारायण 61
- दूसरों की खुशी के लिए
- बाज़ारों की तरफ भी
- एक अजीब सी मुश्किल में हूँ इन दिनों

- अपठनीय
- मेरा घनिष्ठ पड़ोसी

इन्दु जैन 72

- इन्विजिलेशन
- बारिश में
- याद को भूल कर
- जानना ज़रूरी है
- देख
- हवा

अशोक वाजपेयी 85

- वहीं से आऊँगा
- आवाज देता हूँ
- देवताओ
- कहता हूँ
- बेटी के लिए
- वापसी

लीलाधर मण्डलोई 95

- जलस्वप्न
- स्त्री का कंकाल
- कुबड़ा यथार्थ
- डोंगी का गीत
- बेटियों से क्षमायाचना
- कस्तूरी

संजय कुंदन 106

- कहावतें
- तीस की उम्र में माँ को फिर से जानना
- लेटर बॉक्स पर चिड़िया
- अपराधी
- हदबन्दी
- मोहल्ले में पानी

पद्मा सचदेव 120

- डोगरी रूबाइयाँ
- साने की डली
- वो कोना
- भूखा
- ग्रहन
- देविका

सुतिन्दर सिंह नूर 132

- प्रेम व पुस्तक
- वो पूछती है
- रिश्ते की परिभाषा
- तुम केवल मिला ही करो
- तेरे संग चलते हुए
- तू / आप
- कविता व तू
- इतनी भी प्रतीक्षा न करो

नूरजहाँ सरवत 143

गज़लें

- चलने लगी जमीन तो रुकना पड़ा मुझे
- भुला चुके थे मगर ये मुआवजा कब था
- कौन तनहाई का अहसास दिलाता है मुझे

नज़्में

- तुम्हारे नाम लिखती हूँ
- तनहाई
- वक्त की धारा